महर्षि नारद व महर्षि सनत्कुमार संवाद

व्याख्याः श्रृङ्गी ऋषि कृष्ण दत्त जी महाराज

मुनिवरों! एक समय किसी कारण वश देवर्षि नारद को अज्ञानता छा गई। उन्होंने सोचा कि अब मुझे चलना चाहिए, और इस अज्ञानता को शान्त करना चाहिए। वह अपने स्थान से चलकर महर्षि पापड़ी मुनि महाराज के द्वार जा पहुँचे। महर्षि पापड़ी मुनि महाराज ने उनका बड़ा स्वागत किया और पूछा कि आओ, आनंद से हो। नारद मुनि ने कहा, कि भगवन्! आनन्द कहाँ है। आज हममें अज्ञानता छा रही है। आत्मिक शान्ति नहीं हो पा रही है, आत्मिक शान्ति का इच्छुक हूँ। तब महर्षि पापड़ी मुनि महाराज ने कहा कि भगवन्! मेरी तो इच्छा ऐसी है, कि आप महर्षि सनत्कुमार के द्वार पहुँचे, आपको आत्मिक शान्ति अवश्य प्राप्त हो जाएगी।

मुनिवरों! इस आदेश को पा करके देवर्षि नारद वहाँ से चलकर महर्षि सनत्कुमार के द्वार जा पहुँचे। महर्षि ने उनका बड़ा ऊँचा स्वागत किया और उनको ऊँचा स्थान दिया, और कहा कि महाराज! पधारिए। नारद मुनि जी विराजमान हो गए। महर्षि सनत्कुमार ने कहा कि हे देवर्षि नारद! आपका हृदय मग्न नहीं हो रहा है, आपका विनोद कहाँ चला गया है? उस समय नारद मुनि ने कहा कि महाराज! आज मैं आपके चरणों को स्पर्श करने आया हूँ, जिससे मुझे आत्मिक शान्ति प्राप्त हो जाए। उन्होंने पूछा कि आत्मिक शान्ति क्यों नहीं? नारद ने कहा कि महाराज! न प्रति क्यों नहीं है।

अधीहि भगव इति होपससाद सनत्कुमारं नारदस्तँ होवाच यद्वेत्थ तेन मोपसीद ततस्त ऊर्ध्वं वक्ष्यामीति स होवाच॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१.१

नारद और सनत्कुमार 'भू शब्द वाच्य ब्रह्मोपासना'१. कहा जाता है कि हे भगवन्! शिक्षा देवें, यह कहकर नादर सनत्कुमार के समीप बैठ गये। उस (नारद) से

(सनत्कुमार) बोले जो कुछ जानते हैं उसे (प्रकट करके) मुझ को प्राप्त होओ। तब उससे आगे तुम को शिक्षा दूंगा।

व्याख्याः श्रृङ्गी मुनि कृष्ण दत्त जी महाराज

मुनिवरों! तब सनत्कुमार ने कहा कि जिन विद्याओं को तुमने पाया है और जिनको नहीं पाया है, उन्हें निर्णय कराओ। उस समय देवर्षि नारद ने कहा कि भगवन्! मैंने षट् शास्त्रों को, वेदों को, उपवेदों को, गणित विद्या को, सर्वज्ञ विद्याओं को पाया है परन्तु आत्मिक शान्ति नहीं हो पा रही है। महर्षि नारद के इस आदेश को पा करके, महर्षि सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! यह जानकारी सर्वोत्तम है, इसी से तुम्हारा कल्याण होगा। यह जानकारी सबसे मनोहर और विचित्र है। आज तुम जानकारी को ऊँचा बनाओ, यह जानकारी तुम्हें संसार में रमण करा देगी। नारद मुनि ने कहा कि महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या इस जानकारी से बढ़कर भी कोई पदार्थ है संसार में।

ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदँ सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यँ राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्याँ सर्पदेवजनविद्यामेतद्भगवोऽध्येमि॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१.२

पदार्थः वे प्रसिद्ध नारद बोले हे भगवन्! ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद चौथे अथर्ववेद को जानता हूं। इतिहास पुराण और वेदों के वेद (अर्थात् उनके मुख्य विषय) (पित्र्य) शुश्रूषा विज्ञान (राशि) गणित, उत्पात विज्ञान (निधि) अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र नीतिशास्त्र निरूक्त (ब्रह्मविद्यां) ईश्वर प्राप्ति विज्ञान, प्राणिशास्त्र, धनुर्विद्या ज्योतिष, विषैले जन्तुओं की विद्या नृत्यगीत वाद्यशास्त्र इनको हे भगवन्! मैं जानता हूं।

सोऽहं भगवो मन्त्रविदेवास्मि नात्मविच्छ्रुतँ ह्येव मे भगवद्दृशेभ्यस्तरति शोकमात्मविदिति सोऽहं भगवः शोचामि तं मा भगवाञ्छोकस्य पारं तारयत्विति तँ होवाच यद्वै किञ्चैतदध्यगीष्ठा नामैवैतत्॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१.३

पदार्थः हे भगवन्! वह मैं मन्त्र (शब्द) वित् ही हूं आत्मवित् नहीं, क्यों कि आप जैसो से मैने सुन ही रखा है कि आत्मवित् (पुरूष) शोक को पार कर जाते हैं सो मैं हे भगवन्! दुखी हूं उस मुझ को भगवान् शोक के पार उतार दें। उस (नारद) को (सनत्कुमार ने) कहा जो कुछ निश्चय , यह (आपने) अध्ययन किया है, यह नाम ही है।

नाम वा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेद आथर्वणश्चतुर्थ इतिहासपुराणः पञ्चमो वेदानां वेदः पित्र्यो राशिर्दैवो निधिर्वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्या ब्रह्मविद्या भूतविद्या क्षत्रविद्या नक्षत्रविद्या सर्पदेवजनविद्या नामैवैतन्नामोपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१.४

पदार्थः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद चौथा अथर्ववेद निश्चय नाम (है), पांचवां इतिहास पुराण, वेदों के वेद (अर्थात् उनके मुख्य विषय) पितृ, शुश्रूषा, गणित उत्पात विज्ञान (भूचाल आदि), अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र नीतिशास्त्र, निरूक्त, ईश्वर प्राप्ति विज्ञान, प्राणिशास्त्र, धनुर्विद्या, ज्योतिष, विषैले जन्तुओं की विद्या, नृत्यगीत वाद्यशास्त्र ये सब नाम ही हैं (इसलिए सनत्कुमार ने कहा कि) नाम की उपासना करो अर्थात् उन्हें जानो।

महर्षि नारद व महर्षि सनत्कुमार संवाद

व्याख्याः श्रृङ्गी मुनि कृष्ण दत्त जी महाराज

इस आदेश को पाकर महर्षि सनत्कुमार ने कहा कि इससे बढकर भी एक पदार्थ है, और वह है वाणी। आज तुम वाणी की उपासना करो, यथार्थ उच्चारण करो, जो भी वाक्य बोलो, वह यथार्थ बोलो। यथार्थ उच्चारण करने से वाणी में ओज और तेज आ जाएगा। यह वाणी, वह पदार्थ है कि महर्षि श्रृङ्गीऋषि महाराज ने ८४ वर्ष तक मिथ्या का कोई भी वाक्य उच्चारण नहीं किया, जो कहा करते थे, वहीं यथार्थ हुआ करता था। यदि किसी मनुष्य को यह कह दिया कि मृत्यु को प्राप्त हो जा, तो मृत्यु को प्राप्त हो जाता था। हे नारद! अनेक ऋषियों का ऐसा प्रमाण मिलता है। महर्षि अत्रि मुनि का एक आदेश मिला। महर्षि अत्रि मुनि ने अपने जीवन में १२० वर्ष तक सत्यता का पालन करके देखा। यदि वह मार्ग में उड़ते हुए पक्षी को यह कहते कि यह पक्षी मेरे द्वार पर आ जाए, तो वह उड़कर उनके द्वार आ जाता था। हे नारद! यह वाणी बड़ा ऊँचा पदार्थ है, इससे मिथ्या उच्चारण न करो। तुम्हारी वाणी में ओज और तेज उत्पन्न हो जाएगा। यह वाणी वह पदार्थ है, जो तुम्हें परमात्मा से मेल करा देगी। यह वह अमूल्य पदार्थ है, जो हमें समुद्र रूपी सागर से पार ले जाती है। आज तुम वाणी की उपासना करो, वाणी से यथार्थ उच्चारण करो।

स यो नाम ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्नाम्नो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यो नाम ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो नाम्नो भूय इति नाम्नो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१.५

पदार्थः सो जो नाम बड़ा (जानकर) उपासता (काम में लाता) है नाम की गति जहाँ तक है वहाँ तक इस (नामोपासक) का स्वेच्छाचार होता है जो नाम का बड़ा (जानकर) काम में लाता है। नारद हे भगवन्! नाम से भी बड़ा (कोई अन्य पदार्थ)

है ? सनत्कुमार नाम से भी बड़ा (अन्य पदार्थ) है। नारद उसको मेरे लिए भगवान् कहें।

वाग्वाव नाम्नो भूयसी वाग्वा ऋग्वेदं विज्ञापयति यजुर्वेदँ सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यँराशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्याँ सर्पदेवजनविद्यां दिवं च पृथिवीं च वायुं चाकाशं चापश्च तेजश्च देवाँश्च मनुष्याँश्च पशूँश्च वयाँसि च तृणवनस्पतीञ्छ्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलकं धर्मं चाधर्मं च सत्यं चानृतं च साधु चासाधु च हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं च यद्वै वाङ्नाभविष्यन्न धर्मो नाधर्मो व्यज्ञापयिष्यन्न सत्यं नानृतं न साधु नासाधु न हृदयज्ञो नाहृदयज्ञो वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति वाचमुपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२.१

पदार्थः वाणी ही (सनत्कुमार ने कहा कि) नाम से बड़ी है वाणी ही ऋग्वेद को जतलाती है। यजुर्वेद, सामवेद, चतुर्थ अथर्ववेद, पांचवें इतिहास पुराण वेदों के वेद (अर्थात् उनके मुख्य विषय) पितृशुश्रूषा, गणित, उत्पातविद्या, अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, निरूक्त ईश्वरप्राप्ति विज्ञान, प्राणीशास्त्र, धनुर्विद्या, ज्योतिष, विषैली जन्तुओं की विद्या, नृत्यगीत वाद्यशास्त्र (वाणी ही है) (द्युलोक, पृथिवी, वायु, आकाश, जल, तेज, देव, मनुष्य, पशु, पक्षी तृण वनस्पति, हिंसक जन्तु, कीट, पतंग, चींटी, (आदि क्षुद्र) जन्तु, धर्म, अधर्म, सत्य, झूठ, अच्छा, बुरा, हृदय के प्रिय और अप्रिय) निश्चय यदि वाणी न होती तो न, धर्म, न अधर्म जाना जाता न सत्य, न झूठ, न अच्छा, न बुरा, न हृदय का प्रिय, न हृदय का अप्रिय वाणी ही इन सब को जतलाती है। (इसलिए सनत्कुमार ने अन्त में कहा कि) वाणी को प्रयोग में लाओ।

महर्षि नारद व महर्षि सनत्कुमार संवाद

व्याख्याः शृङ्गी मुनि कृष्णा दत्त जी महाराज

देवर्षि नारद ने कहा कि महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ, कि इस वाणी से बढ़कर भी कोई पदार्थ है, इस संसार में? सनत्कुमार ने कहा इस वाणी से बढ़कर भी एक पदार्थ है, और वह है मनी राम। यह मन बड़ा ऊँचा है। वायु से भी तीव्र गति वाला है। यह मन तुम्हें इन्द्र लोक तक पहुँचा देगा। इस मन को स्थिर करो,। यह तुम्हें बहुत ऊँचा पहुँचा देगा।

मुनिवरों! इसका निर्णय देते हुए दार्शनिकों ने कहा है कि जैसे किसी मानव ने, किसी ब्रह्मचारी ने, किसी ब्रह्मचारिणी के सौन्दर्य को देखा या किसी ब्रह्मचारिणी ने किसी ब्रह्मचारी के सौन्दर्य को देखा और ब्रह्मचारिणी से प्रश्न किया जाए कि हे प्रिय देवकन्या! तूने इस सौन्दर्य को देखा है। वह कौन सा पदार्थ तेरे द्वारा है, जिससे तूने इस सौन्दर्य का देखा है। उस समय उत्तर मिलेगा कि मेरे नेत्रों ने इस सौन्दर्य को देखा है। उस समय दार्शनिक कह रहा है कि अरे, नेत्र तो जड़ पदार्थ है, इनमें देखने की सत्ता कहाँ है। आगे दार्शनिक कह रहा हैं कि नेत्रों के पीछे पिछला पटल है। उन नेत्रों से ज्योति पाकर के, उस पिछले पटल ने, उस सौन्दर्य को देखा। दूसरे दार्शनिक ने कहा कि भाई! पिछला पटल भी तो जड़ पदार्थ है, इसमें देखने की सत्ता कहा है? आगे दार्शनिक कह रहा है कि नहीं, पिछले पटल ने उन वासनाओं को ले जाकर तन्मात्राओं के समक्ष रखा। तन्मात्राओं से यह संसार रचा हुआ है। जिन तन्मात्राओं से सृष्टि के प्रारम्भ में परमपिता परमात्मा ने उस विशाल संसार को रचा है। तन्मात्राओं ने सौन्दर्य को देखा है। आगे दार्शनिक कह रहा है कि तन्मात्रा भी तो प्रकृति के पदार्थ हैं, इनमें देखने की सत्ता कहाँ है? उस समय दार्शनिक कह रहा है अरे, इन तन्मात्राओं ने सब कुछ इस मनीराम के द्वार पहुँचा दिया है। यह मनीराम स्थिर है तो निर्णय अच्छा करेगा, और यदि चञ्चल है

तो इसकी विलक्षण गति हो जाएगी, मनुष्य की मृत्यु का सामान बनाने लगेगा। एक प्रमाण हमारे समक्ष आ पहुँचा है। सनत्कुमार ने नारद से कहा सुनो, इस प्रमाण को, यह एक अलंकार है। मन कैसे स्थिर होगा, सुनो।

स यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्वाचो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो वाचो भूय इति वाचो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२.२

पदार्थः सो जो वाणी को बड़ा (जानकर) उपासता (काम में लाता) है वाणी की गति जहाँ तक वहाँ तक इस (वाणी के उपासक) का स्वेछाचार होता है, जो वाणी को बड़ा जानकर काम में लाता है। नारद हे भगवन्! वाणी से बड़ा (भी कुछ) है ? सनत्कुमार (हां) वाणी से बड़ा (कुछ) है। नारद उसे मेरे लिए भगवान् कहें।

महर्षि नारद व महर्षि सनत्कुमार संवाद

व्याख्याः श्रृङ्गी मुनि कृष्णा दत्त जी महाराज

एक द्रव्यपति थे, उनके द्वार एक सेवक जा पहुँचा, और उनसे कहा कि मैं आपकी कुछ सेवा करना चाहता हूँ। द्रव्यपति ने कहा क्या, वेतन लोगे? उस सेवक ने कहा, महाराज! मैं वेतन कुछ नही लूंगा परन्तु मेरा एक नियम है, कि जब मुझे कार्य करने को नहीं मिलेगा, तो तब ही मैं आपको मृत्यु प्राप्त करा दूंगा। द्रव्यपति ने कहा कि अच्छा, तुम मेरे द्वारा कार्य करो। वह सेवक द्रव्यपति के द्वारा कार्य करने लगा। द्रव्यपति जो उच्चारण करता, सेवक उस कार्य को कर देता। कुछ समय के पश्चात्, उस द्रव्यपति को कोई कार्य उस सेवक को देने को न रहा। द्रव्यपति बहुत चिंतित होने लगा। एक समय मार्ग में भ्रमण कर रहे थे, वहाँ एक बुद्धिमान मिला और उसने द्रव्यपति से कहा कि आप तो बड़े थकित होते चले जा रहे हैं। तब उन्होंने सब वार्ता कह सुनाई कि मेरे द्वार पर एक सेवक आया हुआ है। उसने मुझसे वचन लिया हुआ है कि जब उसे कोई कार्य करने को न रहेगा तो वह मुझे मृत्यु को पहुँचा देगा। अब मेरे पास उसको कार्य देने के लिए नहीं रहा है, इसलिए मैं उसके भुजों से नहीं बचूंगा। उस समय बुद्धिमान ने कहा कि भाई! तुम उसको अपने कार्य में क्यों लगा रहे हो, संसार के कार्य में लगा दो। उसको छूटकारा नहीं मिलेगा, और तुम उसके भुजों से बच जाओगे। बुद्धिमान की वार्ता सुनकर द्रव्यपति गृह आया और आकर उसको संसार का कार्य बता दिया कि जाओ, तुम संसार का कार्य करो, तुम्हें छुटकारा नहीं मिलेगा। वह संसार के शुभ कार्य करने लगा, उसको छुटकारा नहीं मिला और द्रव्यपति उसके भुजों से बच गया।

यही दशा मनुष्य के मन की है। यदि मन को संसार के शुभ कार्यो में और परमात्मा के चिन्तन में लगाए रखते हैं, तो तब तक यह यथार्थ रहता है और जब इसको छुटकारा मिला, सङ्कल्प विकल्प आए, तो मनुष्य मृत्यु का सामना करने लगता है।

मनो वाव वाचो भूयो यथा वै द्वे वामलके द्वे वा कोले द्वौ वाक्षौ मुष्टिरनुभवत्येवं वाचं च नाम च मनोऽनुभवति स यदा मनसा मनस्यति मन्त्रानधीयीयेत्यथाधीते कर्माणि कुर्वीयेत्यथ कुरुते पुत्राँश्च पशूँश्चेच्छेयेत्यथेच्छत इमं च लोकममुं चेच्छेयेत्यथेच्छते मनो ह्यात्मा मनो हि लोको मनो हि ब्रह्म मन उपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.३.१

पदार्थः मन ही वाणी से बढकर है जैसे मुठी दो आवंलों, दो बेरों, अथवा दो बहेड़ों को अनुभव करती है वैसे ही मन वाणी और नाम (दोनों को) अनुभव करता है। सो जब (कोई) मन से मनन करता है कि मन्त्रों को पढ़ूं। तो पढ़ता है कर्मों को करूं तो करता है। पुत्रों और पशुओं की इच्छा करूं तो इच्छा करता है इस लोक और परलोक की इच्छा करूं तो इच्छा करता है। मन ही (कर्त्तृत्व और भोक्तृत्व का साथी होने से) आत्मा है, मन ही लोक है, मन ही (इन्द्रियादि की अपेक्षा) बड़ा है। (इसलिए सनत्कुमार कहता है) मन को उपासो (मन से काम लो)।

महर्षि नारद व महर्षि सनत्कुमार संवाद

व्याख्याः श्रृङ्गी मुनि कृष्णा दत्त जी महाराज

सनत्कुमार ने नारद मुनि से कहा कि हे नारद! आज तुम मन को स्थिर करो, मन की याचना करो। यह मन बड़ा ऊँचा पदार्थ है, यह मन तुम्हारा परमात्मा से मिलान करा देगा। नारद मुनि ने कहा कि महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ, कि इस मन से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है? सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! इस मन से बढ़कर बुद्धि है, पर यह परमात्मा की देन है, बड़ा ऊँचा पदार्थ है। आज परमात्मा से उच्चारण करो, कि हे परमात्मा! हमें बुद्धि दो, जिससे विधाता! हम संसार को अच्छी तरह निर्णय कर सकें। यह मन सब वासनाओं को ले जाकर, बुद्धि को दे देता है, कि हम उस सौन्दर्य को क्या मानें। बुद्धि निर्णयात्मक है।

मुनिवरों! हमारे आचार्यों ने बुद्धि कई प्रकार की मानी है। बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा इन चार प्रकार की बुद्धियों का विवेचन आता है। आज समय आज्ञा नहीं दे रहा है। किसी द्वितीय काल में बुद्धि का विवेचन किया जाएगा।

पूज्य महानन्द जीः भगवन! बुद्धि का सूक्ष्म सा आदेश दे दीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेवः नहीं, बेटा! द्वितीय काल में, अच्छा

तो मुनिवरों! देखो, बुद्धि हमारे जीवन की संचालक है। बुद्धि से कार्य करना चाहिए। मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा तीनों प्रकार की बुद्धि आ जाने के पश्चात यह आत्मा परमात्मा में रमण कर जाता है। मोक्ष प्राप्त हो जाता है। आज हम इन बुद्धियों पर विचार नहीं करते।

इसके पश्चात नारद मुनि ने कहा महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ, कि बुद्धि से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है या नहीं?

स यो मनो ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्मनसो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यो मनो ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो मनसो भूय इति मनसो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति ॥ छान्दयोग्पनिषद ७.३.२

पदार्थः सो जो मन को बड़ा (जानकर) उपासता है, मन की गति जहाँ तक है वहाँ तक इस (मनोपासक) का स्वेच्छाचार होता है जो मन को बड़ा जानकर काम में लाता है। नारद हे भगवन्! मन से बड़ा (भी कुछ) है। सनत्कुमार (हाँ) मन से बड़ा (कुछ) है। नारद उसे मेरे लिए भगवान् कहें।

महर्षि नारद व महर्षि सनत्कुमार संवाद

श्रृङ्गी मुनि कृष्णदत्त जी महाराज

व्याख्याः श्रृङ्गी मुनि कृष्णा दत्त जी महाराज

सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! इस बुद्धि से बढ़कर यह अन्तःकरण है। तुम इस अन्तःकरण को पवित्र बनाओ। इसको पवित्र बनाने से तुम्हारा जीवन शिरोमणि बन जाएगा। यह अन्तःकरण वह पदार्थ है, कि जिसमें जितने बड़े लोक लोकान्तर हैं, जैसे हमारा यह पृथ्वी मण्डल है ऐसी ऐसी तीस लाख पृथ्वियाँ इस सूर्य मण्डल में समा जाती हैं और जैसा सूर्य मण्डल है ऐसे ऐसे एक सहस्र मण्डल बृहस्पति मण्डल में समा जाते हैं। परन्तु यह सूक्ष्म सा अन्तःकरण है, इसमें यह सब लोक लोकान्तर समा जाते हैं। ब्रह्माण्ड का ब्रह्माण्ड, जो परमात्मा का रचा हुआ है, इस अन्तःकरण में समा जाता है। यह अन्तःकरण इतना पवित्र है, इसको ऊँचा बनाओ। बुद्धियों को अन्तःकरण में रमण कर दो। जब बुद्धि अन्तःकरण में रमण करने लगेगी, तो तुम्हारा अन्तःकरण पवित्र बन जाएगा।

उस समय देवर्षि नारद ने कहा कि महाराज! मैं अन्तःकरण की ओर अधिक व्याख्या नहीं चाहता, मैं तो यह जानना चाहता हूँ, कि इस अन्तःकरण से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है?

सङ्कल्पो वाव मनसो भूयान्यदा वै सङ्कल्पयतेऽथ मनस्यत्यथ वाचमीरयति तामु नाम्नीरयति नाम्नि मन्त्रा एकं भवन्ति मन्त्रेषु कर्माणि॥ छान्दयोग्पनिषद ७.४.१

पदार्थः निश्चय (है कि) संकल्प मन से बडा है। जब ही (मनुष्य) संकल्प करता है तभी मनन करता है और तभी वाणी को प्रेरणा करता है। तभी उस (वाणी) को नाम में प्रेरता है। नाम में मन्त्र एक होते हैं और मन्त्रों में कर्म।

तानि ह वा एतानि सङ्कल्पैकायनानि सङ्कल्पात्मकानि सङ्कल्पे प्रतिष्ठितानि समक्लृपतां द्यावापृथिवी समकल्पेतां वायुश्चाकाशं च समकल्पन्तापश्च तेजश्च तेषाँ सङ्क्ल्प्त्यै वर्षं

सङ्कल्पते वर्षस्य सङ्क्लृप्त्या अन्नँ सङ्कल्पतेऽन्नस्य सङ्क्लृप्त्यै प्राणाः सङ्कल्पन्ते प्राणानाँ सङ्क्लृप्त्यै मन्त्राः सङ्कल्पन्ते मन्त्राणाँ सङ्क्लृप्त्यै कर्माणि सङ्कल्पन्ते कर्मणां सङ्क्लृप्त्यै लोकः सङ्कल्पते लोकस्य सङ्क्लृप्त्यै सर्वँ सङ्कल्पते स एष सङ्कल्पः सङ्कल्पमुपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.४.२

पदार्थः निश्चय से (मन, वाणी, नाम) संकल्पाश्च य संकल्परूप और संकल्प में प्रतिष्ठित है। द्युलोक और पृथिवी (मानो समान) संकल्प वाले हैं। वायु और आकाश (मानो एक) संकल्प वाले हैं। जल और तेज संकल्प वाले हैं, उन (जल आदि) के संकल्प से वर्षा संकल्प वाली होती है, वर्षा के संकल्प से अन्न संकल्पमय होता है। अन्न के संकल्प से प्राण संकल्प करते हैं, प्राणों के संकल्प से मन्त्र संकल्पित होते हैं, मन्त्रों के संकल्प से, कर्म संकल्प वाले होते हैं, कर्मों के संकल्प से लोक संकल्प वाले होते हैं, लोक के संकल्प से सभी संकल्पित होते हैं, ऐसा यह संकल्प है, संकल्प की उपासना करो (काम में लाओ)।

स यः सङ्कल्पं ब्रह्मेत्युपास्ते सङ्क्लृप्तान्वै स लोकान्ध्रुवान्ध्रुवः प्रतिष्ठितान् प्रतिष्ठितोऽव्यथमानानव्यथमानोऽभिसिध्यति यावत्सङ्कल्पस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यः सङ्कल्पं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवः सङ्कल्पाद्भूय इति सङ्कल्पाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.४.३

पदार्थः सो जो संकल्प को बड़ा (जानकर) काम में लाता है निश्चित है कि वह दृढ़, प्रतिष्ठित और उक्लेशित होकर, संकल्पित लोकों को प्राप्त करता है , (जो दृढ़, प्रतिष्ठा वाला और क्लेश रहित हैं) संकल्प की जहाँ तक गति है इस (संकल्पोपासक) का स्वेच्छाचार होता है, जो संकल्प को बड़ा जान कर काम में लाता है। नारद हे भगवन्! संकल्प से बड़ा (भी कुछ) है? सनत्कुमार (हाँ) संकल्प से भी बड़ा (भी कुछ) है। नारद भगवान् उसे मेरे लिए कहें।

चित्तं वाव सङ्कल्पाद्भूयो यदा वै चेतयतेऽथ सङ्कल्पयतेऽथ मनस्यत्यथ वाचमीरयति तामु नाम्नीरयति नाम्नि मन्त्रा एकं भवन्ति मन्त्रेषु कर्माणि॥ छान्दयोग्पनिषद ७.५.१

पदार्थः निश्चित चित्त संकल्प से बढ़कर है जब (कोई) चिन्तन करता है तभी संकल्प करता है, तभी मनन करता है, तभी वाणी को प्रेरता है उस (वाणी) को तभी नाम में प्रेरित करता है, नाम में मन्त्र एक होते है और मन्त्रों में कर्म।

तानि ह वा एतानि चित्तैकायनानि चित्तात्मानि चित्ते प्रतिष्ठितानि तस्माद्यद्यपि बहुविदचित्तो भवति नायमस्तीत्येवैनमाहुर्यदयं वेद यद्वा अयं विद्वान्नेत्थमचित्तः स्यादित्यथ यद्यल्पविच्चित्तवान्भवति तस्मा एवोत शुश्रूषन्ते चित्तँह्येवैषामेकायनं चित्तमात्मा चित्तं प्रतिष्ठा चित्तमुपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.५.२

पदार्थः निश्चय वे ये (संकल्पादि) चित्त के आश्रय, चित्त स्वरूप और चित्त ही में प्रतिष्ठित हैं। इसलिए यद्यपि (कोई) बड़ा विद्वान् अस्थिर चित्त होता है तो उसको कहते हैं नहीं (के बराबर) है। जो यह (पुरूष कुछ) जानता है अथवा यह विद्वान् (होता तो) ऐसा अस्थिर चित्त न होता और यदि (कोई) थोड़ा जानने वाला स्थिर चित्त वाला होता है उसी की सब सेवा करते हैं। चित्त ही इन सब (नाम से संकल्प तक) का एक मात्र आश्रय है, चित्त ही आत्मा है और चित्त ही प्रतिष्ठा है। चित्त ही की उपासना करो।

महर्षि नारद व महर्षि सनत्कुमार संवाद

व्याख्याः श्रृङ्गी मुनि कृष्णा दत्त जी महाराज

उस समय देवर्षि नारद ने कहा कि महाराज! मैं अन्तःकरण की ओर अधिक व्याख्या नहीं चाहता, मैं तो यह जानना चाहता हूँ, कि इस अन्तःकरण से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है?

स यश्चित्तं ब्रह्मेत्युपास्ते चित्तान्वै स लोकान्ध्रुवान्ध्रुवः प्रतिष्ठितान्प्रतिष्ठितोऽव्यथमानानव्यथमानोऽभिसिध्यति यावच्चित्तस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यश्चित्तं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवश्चित्ताद्भूय इति चित्ताद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.५.३

पदार्थः सो जो (कोई) चित्त को बड़ा (जानकर) काम में लाता है, निश्चित है कि वह दृढ़ प्रतिष्ठित और अक्लेशित संकल्पित लोकों को प्राप्त करता है, जो दृढ़ प्रतिष्ठा वाले और क्लेश रहित हैं। चित्त की जहाँ तक पहुंच है इस (चित्तोपासक) का स्वेच्छाचार होता है, जो चित्त को बड़ा जानकर काम में लाता है। नारद हे भगवन्! चित्त से बड़ा (भी कुछ) है ? सनत्कुमार (हाँ) चित्त से बड़ा कुछ है। नारद भगवान् उसे मेरे लिए कहें।

महर्षि नारद व महर्षि सनत्कुमार संवाद

व्याख्याः श्रृङ्गी मुनि कृष्णा दत्त जी महाराज

नारद मुनि के इस आदेश को पाकर सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! ब्रह्मचर्य से बढ़कर यह अन्न है। इस अन्न और वनस्पतियों की याचना करो। यह अन्न हमें ओज और ब्रह्मचर्य का देने वाला है, यह अन्न हमारा पूज्य है, इस अन्न की याचना करते चले जाओ। नारद मुनि ने कहा कि क्या यह अन्न ही सबसे बड़ा है।

ध्यानं वाव चित्ताद्भूयो ध्यायतीव पृथिवी ध्यायतीवान्तरिक्षं ध्यायतीव द्यौर्ध्यायन्तीवापो ध्यायन्तीव पर्वता देवमनुष्यास्तस्माद्य इह मनुष्याणां महत्तां प्राप्नुवन्ति ध्यानापादाँशा इवैव ते भवन्त्यथ येऽल्पाः कलहिनः पिशुना उपवादिनस्तेऽथ ये प्रभवो ध्यानापादाँशा इवैव ते भवन्ति ध्यानमुपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.६.१

पदार्थः ध्यान ही, (सनत्कुमार कहता है) चित्त से बड़ा है, पृथिवी मानो ध्यान कर रही है, अन्तरिक्ष ध्यान करता सा है, द्युलोक मानो ध्यान कर रहा है, जल मानो ध्यान में निमग्न है, पर्वत मानो ध्यान कर रहे हैं, इसलिए मनुष्यों में जो, यहाँ महत्त्व प्राप्त करते हैं, ध्यान की प्राप्ति की , मानो वे एक कला (अंश) होते हैं और जो क्षुद्र पुरूष (ध्यान रहित हैं) वे कलह उपद्रव करने वाले चुगलखोर और खुशामदी होते हैं। और जो प्रभुता वाले (ऊंचे दरजे के मनुष्य हैं) वे ध्यान के, मानो, एक अंश ही (के प्रताप से) हैं। (इसलिए हे नारद!) ध्यान से काम लो।

स यो ध्यानं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्ध्यानस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यो ध्यानं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो ध्यानाद्भूय इति ध्यानाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.६.१

पदार्थः सो जो कोई ध्यान को बड़ा (जानकर) काम में लाता है ध्यान की, जहाँ

तक पहुंच है इस (ध्यानोपासक) का स्वेच्छाचार होता है जो ध्यान को बड़ा जानकर काम में लाता है। नारद हे भगवन्! ध्यान से (भी कुछ) बड़ा है ? सनत्कुमार (हां) ध्यान से बड़ा (कुछ है)। नारद भगवान् उसे मेरे लिए कहें।

विज्ञानं वाव ध्यानाद्भूयः विज्ञानेन वा ऋग्वेदं विजानाति यजुर्वेदँ सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यँराशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्याँ सर्पदेवजनविद्यां दिवं च पृथिवीं च वायुं चाकाशं चापश्च तेजश्च देवाँश्च मनुष्याँश्च पशूँश्च वयाँसि च तृणवनस्पतीञ्छ्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलकं धर्मं चाधर्मं च सत्यं चानृतं च साधु चासाधु च हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं चान्नं च रसं चेमं च लोकममुं च विज्ञानेनैव विजानाति विज्ञानमुपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.७.१

पदार्थः (सनत्कुमार ने कहा) विज्ञान ही ध्यान से बड़ा है। विज्ञान ही से ऋग्वेद जाना जाता है। यजुर्वेद, सामवेद, चतुर्थ अथर्ववेद, पांचवां इतिहास पुराण , वेदों का वेद (वेद के मुख्य विषय) सेवा विज्ञान, गणित, उत्पात विज्ञान, अर्थशास्त्र , तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, निरूक्त, ईश्वरप्राप्ति विद्या, प्राणीशास्त्र, ज्योतिष, विषैले जन्तुओं की विद्या, नृत्यगानवाद्य विद्या, द्युलोक , पृथिवी, वायु, आकाश, जल , तेज, देव, मनुष्य, पशु, पक्षी, तृण, वनस्पति, हिंसक जन्तु, कीट, पतंग, चींटी, धर्म, अधर्म, सत्य, झूठ, अच्छा, बुरा हृदय के प्रिय अप्रिय, अन्न, रस, इस लोक और परलोक को विज्ञान ही से जानता है। (इसलिए सनत्कुमार ने कहा) विज्ञान से काम लो।

स यो विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्ते विज्ञानवतो वै स लोकाञ्ज्ञानवतोऽभिसिध्यति यावद्विज्ञानस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यो विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो विज्ञानाद्भूय इति विज्ञानाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.७.१

पदार्थः सो जो कोई विज्ञान को बड़ा (जानकर) काम में लाता है निश्चय वह विज्ञानवेत्ता होता है और विज्ञान वाले लोकों को प्राप्त करता है। जहाँ तक विज्ञान की पहुँच है, वहाँ तक इस (विज्ञानोपासक) का स्वेच्छाचार होता है जो विज्ञान को

बड़ा जानकर काम में लाता है। नारद हे भगवन्! विज्ञान से (भी कुछ) बड़ा है ? सनत्कुमार (हां) विज्ञान से (भी कुछ) बड़ा है। नारद भगवान् उसे मेरे लिए कहें।

बलं वाव विज्ञानाद्भूयोऽपि ह शतं विज्ञानवतामेको बलवानाकम्पयते। स यदा बली भवत्यथोत्थाता भवत्युत्तिष्ठन्परिचरिता भवति परिचरन्नुपसत्ता भवत्युपसीदन्द्रष्टा भवति श्रोता भवति मन्ता भवति बोद्धा भवति कर्ता भवति विज्ञाता भवति। बलेन वै पृथिवी तिष्ठति बलेनान्तरिक्षं बलेन द्यौर्बलेन पर्वता बलेन देवमनुष्या बलेन पशवश्च वयाँसि च तृणवनस्पतयः श्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलकं बलेन लोकस्तिष्ठति बलमुपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.८.१

पदार्थः (सनत्कुमार ने कहा -) बल ही विज्ञान से भी बड़ा है। प्रसिद्ध है कि सौ (बलहीन) विज्ञान जानने वालों को एक बलवान् कम्पा देता है वह जब बली होता है तब (कार्य कर सकने की) क्षमता होने पर सेवा करने वाला बनता है सेवा करता हुआ (विद्वान् का) समीपवर्त्ती होता है। समीप बैठता हुआ, देखने वाला, सुनने वाला, मनन करने वाला, जानने वाला, काम करने में समर्थ होता और विशेष ज्ञानवान् होता है। बल से पृथिवी ठहरती है, बल से अन्तरिक्ष, बल से द्युलोक, बल से पर्वत, बल से देव मनुष्य, बल से पशु, पक्षी, तृण वनस्पति, हिंसक जन्तु, कीट पतंग, चींटी स्थित हैं। बल से (यह) लोक ठहरा हुआ है। इसलिए सनत्कुमार ने कहा बल को प्रयोग में लाओ।

स यो बलं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्बलस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यो बलं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो बलाद्भूय इति बलाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.८.२

पदार्थः सो जो कोई बल को बड़ा (जानकर) प्रयोग में लाता है तो जहाँ तक बल की पहुंच है, इस (बलोपासक) का स्वेच्छाचार होता है। जो बल को बड़ा (जानकर) काम में लाता है। नारद बल से भी (कुछ) बढकर है ? सनत्कुमार (हां) बल से भी (कुछ) बढ़कर है। नारद भगवान् उसे मेरे लिए कहें।

अन्नं वाव बलाद्भूयस्तस्माद्यद्यपि दश रात्रीर्नाश्नीयाद्यद्यु ह जीवेदथवाद्रष्टाश्रोतामन्ताबोद्धाकर्ताविज्ञाता भवत्यथान्नस्यायै द्रष्टा भवति श्रोता भवति मन्ता भवति बोद्धा भवति कर्ता भवति विज्ञाता भवत्यन्नमुपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.९.१

पदार्थः (सनत्कुमार ने कहा -) अन्न ही बल से बढ़कर है इसीलिए यदि दस दिन रात (मनुष्य) भोजन करे और जो वह जिन्दा रह जाये तो वह न देखने, न सुनने, न मनन करने, न जानने, न करने, न विशेष ज्ञान प्राप्त करने वाला होता है। इसके बाद (जो) अन्न प्राप्त हो जावे तो द्रष्टा, श्रोता, मन्ता, बोद्धा, कर्ता और विज्ञाता होता है। (इसीलिए सनत्कुमार ने कहा) अन्न से काम लो।

स योऽन्नं ब्रह्मेत्युपास्तेऽन्नवतो वै स लोकान्पानवतोऽभिसिध्यति यावदन्नस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति योऽन्नं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवोऽन्नाद्भूय इत्यन्नाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.९.२

पदार्थः सो जो कोई अन्न को बड़ा (जानकर) प्रयोग में लाता है तो वह निश्चय अन्न और पान वाले लोकों को प्राप्त करता है, जहाँ तक अन्न की पहुंच है, वहाँ तक इस (अन्नोपासक) का स्वेच्छाचार होता है जो अन्न को बड़ा (जानकर) प्रयोग में लाता है। नारद हे भगवन्! अन्न से (भी कुछ) बढ़कर है ? सनत्कुमार (हाँ) अन्न से भी (कुछ) बढ़कर है। नारद भगवान् उसे मेरे लिए कहें।

महर्षि नारद व महर्षि सनत्कुमार संवाद

व्याख्याः व्याख्याःशृङ्गी मुनि कृष्ण दत्त जी महाराज

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी! आज तो आप प्राणों की व्याख्या पर कुछ उच्चारण कीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेवः बेटा! इसकी व्याख्या, हमने पूर्व स्थान में की है।

पूज्य महानन्द जीः तो भगवन्! आज आपको कोई दोष लग जाएगा?

पूज्यपाद गुरुदेवः (हास्य के साथ) अरे, यह मूर्खों वाली वार्ता कहाँ से ले आए। चलो, प्राणों के ऊपर हो जाएगा। परन्तु इसका व्याख्यान हम पूर्व दे चुके हैं।

पूज्य महानन्द जीः तो भगवन्! आज और कर दीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेवः अच्छा, धन्यवाद! तो महानन्द जी कौन सा?

पूज्य महानन्द जीः भगवन्! नारद मुनि और सनत्कुमार का जो संवाद है, वह बड़ा प्रिय लगता है।

पूज्यपाद गुरुदेवः (हास्य के साथ) अच्छा धन्यवाद।

मुनिवरों! आज मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने पुनः से प्राणों की व्याख्या करने का आदेश दिया। अभी अभी यह विनोद की वार्ता प्रकट कर रहे थे। इन्होंने अभी अभी कहा कि यदि आप प्राण की द्वितीय व्याख्या कर देंगे तो क्या आपको दोष लग जाएगा। इनके शब्द कितने जिज्ञासा के और महान हैं। हर समय विनोद ही विनोद करते रहते हैं। वास्तव में मनुष्य को विनोद में ही रहना चाहिए। जब मानव विनोद ही विनोद करता है, तो उसका हृदय पवित्र, निर्मल और स्वच्छ होता है। मुनिवरों! आज हम परमात्मा की गोद में जाना चाहते थे। परन्तु आज प्राणों की व्याख्या द्वितीय निर्णय कर दें। देव ऋषि नारद और सनत्कुमार दोनों का संवाद बड़ा विचित्र है, सुनें।

प्राण मीमांसा

मुनिवरों! परमपिता परमात्मा ने हमारे यहाँ दो प्रकार का प्राण दिया है। एक सामान्य प्राण है और एक विशेष प्राण है। सामान्य प्राण वह पदार्थ है, जो संसार को चला रहा है, लोक लोकान्तरों में रमण कर रहा है। सूर्य मण्डल में, वायु मण्डल में, जल मण्डल में, अन्तरिक्ष मण्डल सबमें ओत प्रोत हो रहा है। परन्तु द्वितीय विशेष प्राण है, जो आत्मा की आज्ञा से चला करता है। हमारे शरीर में आत्मा के अनुकूल पाँच प्रकार के प्राण माने गए हैं प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान। ये पाँच प्राण हैं। इन पाँचों प्राणों की संज्ञा बड़ी विचित्र है। आगे समय आता रहेगा, तो इनकी व्याख्या करते रहेंगे। आज तो जैसा महानन्द जी ने कहा है प्राण के ऊपर ही कुछ व्याख्या करनी है। मनुष्य को प्राणों को विचारना चाहिए, कि प्राण हमारा कितना संचालक है, यह प्राण हमें कहाँ कहाँ तक पहुंचा देता है यह प्राण ही संसार को चला रहा है जितने भी चराचर प्राणी हैं ये सब प्राणधारी हैं। आज देखो, ऋषियों का संवाद हमारे कण्ठ आ गया हैं।

देवर्षि नारद को अज्ञानता

मुनिवरों! एक समय किसी कारण वश देवर्षि नारद को अज्ञानता छा गई। उन्होंने सोचा कि अब मुझे चलना चाहिए, और इस अज्ञानता को शान्त करना चाहिए। वह अपने स्थान से चलकर महर्षि पापड़ी मुनि महाराज के द्वार जा पहुँचे। महर्षि पापड़ी मुनि महाराज ने उनका बड़ा स्वागत किया और पूछा कि आओ, आनंद से हो। नारद मुनि ने कहा, कि भगवन्! आनन्द कहाँ है। आज हममें अज्ञानता छा रही है। आत्मिक शान्ति नहीं हो पा रही है, आत्मिक शान्ति का इच्छुक हूँ। तब महर्षि पापड़ी मुनि महाराज ने कहा कि भगवन्! मेरी तो इच्छा ऐसी है, कि आप महर्षि सनत्कुमार के द्वार पहुँचे, आपको आत्मिक शान्ति अवश्य प्राप्त हो जाएगी।

महर्षि सनत्कुमार के द्वार पर देवर्षि नारद

मुनिवरों! इस आदेश को पा करके देवर्षि नारद वहाँ से चलकर महर्षि सनत्कुमार के द्वार जा पहुँचे। महर्षि ने उनका बड़ा ऊँचा स्वागत किया और उनको ऊँचा स्थान

दिया, और कहा कि महाराज! पधारिए। नारद मुनि जी विराजमान हो गए। महर्षि सनत्कुमार ने कहा कि हे देवर्षि नारद! आपका हृदय मग्न नहीं हो रहा है, आपका विनोद कहाँ चला गया है? उस समय नारद मुनि ने कहा कि महाराज! आज मैं आपके चरणों को स्पर्श करने आया हूँ, जिससे मुझे आत्मिक शान्ति प्राप्त हो जाए। उन्होंने पूछा कि आत्मिक शान्ति क्यों नहीं? नारद ने कहा कि महाराज! न प्रति क्यों नहीं है।

मुनिवरों! तब सनत्कुमार ने कहा कि जिन विद्याओं को तुमने पाया है और जिनको नहीं पाया है, उन्हें निर्णय कराओ। उस समय देवर्षि नारद ने कहा कि भगवन्! मैंने षट् शास्त्रों को, वेदों को, उपवेदों को, गणित विद्या को, सर्वज्ञ विद्याओं को पाया है परन्तु आत्मिक शान्ति नहीं हो पा रही है। महर्षि नारद के इस आदेश को पा करके, महर्षि सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! यह जानकारी सर्वोत्तम है, इसी से तुम्हारा कल्याण होगा। यह जानकारी सबसे मनोहर और विचित्र है। आज तुम जानकारी को ऊँचा बनाओ, यह जानकारी तुम्हें संसार में रमण करा देगी। नारद मुनि ने कहा कि महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या इस जानकारी से बढ़कर भी कोई पदार्थ है संसार में।

वाणी की उपासना

इस आदेश को पाकर महर्षि सनत्कुमार ने कहा कि इससे बढकर भी एक पदार्थ है, और वह है वाणी। आज तुम वाणी की उपासना करो, यथार्थ उच्चारण करो, जो भी वाक्य बोलो, वह यथार्थ बोलो। यथार्थ उच्चारण करने से वाणी में ओज और तेज आ जाएगा। यह वाणी, वह पदार्थ है कि महर्षि शृङ्गीऋषि महाराज ने ८४ वर्ष तक मिथ्या का कोई भी वाक्य उच्चारण नहीं किया, जो कहा करते थे, वहीं यथार्थ हुआ करता था। यदि किसी मनुष्य को यह कह दिया कि मृत्यु को प्राप्त हो जा, तो मृत्यु को प्राप्त हो जाता था। हे नारद! अनेक ऋषियों का ऐसा प्रमाण मिलता है। महर्षि अत्रि मुनि का एक आदेश मिला। महर्षि अत्रि मुनि ने अपने

जीवन में १२० वर्ष तक सत्यता का पालन करके देखा। यदि वह मार्ग में उड़ते हुए पक्षी को यह कहते कि यह पक्षी मेरे द्वार पर आ जाए, तो वह उड़कर उनके द्वार आ जाता था। हे नारद! यह वाणी बड़ा ऊँचा पदार्थ है, इससे मिथ्या उच्चारण न करो। तुम्हारी वाणी में ओज और तेज उत्पन्न हो जाएगा। यह वाणी वह पदार्थ है, जो तुम्हें परमात्मा से मेल करा देगी। यह वह अमूल्य पदार्थ है, जो हमें समुद्र रूपी सागर से पार ले जाती है। आज तुम वाणी की उपासना करो, वाणी से यथार्थ उच्चारण करो।

मन

देवर्षि नारद ने कहा कि महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ, कि इस वाणी से बढ़कर भी कोई पदार्थ है, इस संसार में? सनत्कुमार ने कहा इस वाणी से बढ़कर भी एक पदार्थ है, और वह है मनी राम। यह मन बड़ा ऊँचा है। वायु से भी तीव्र गति वाला है। यह मन तुम्हें इन्द्र लोक तक पहुँचा देगा। इस मन को स्थिर करो, । यह तुम्हें बहुत ऊँचा पहुँचा देगा।

मुनिवरों! इसका निर्णय देते हुए दार्शनिकों ने कहा है कि जैसे किसी मानव ने, किसी ब्रह्मचारी ने, किसी ब्रह्मचारिणी के सौन्दर्य को देखा या किसी ब्रह्मचारिणी ने किसी ब्रह्मचारी के सौन्दर्य को देखा और ब्रह्मचारिणी से प्रश्न किया जाए कि हे प्रिय देवकन्या! तूने इस सौन्दर्य को देखा है। वह कौन सा पदार्थ तेरे द्वारा है, जिससे तूने इस सौन्दर्य का देखा है। उस समय उत्तर मिलेगा कि मेरे नेत्रों ने इस सौन्दर्य को देखा है। उस समय दार्शनिक कह रहा है कि अरे, नेत्र तो जड़ पदार्थ है, इनमें देखने की सत्ता कहाँ है। आगे दार्शनिक कह रहा हैं कि नेत्रों के पीछे पिछला पटल है। उन नेत्रों से ज्योति पाकर के, उस पिछले पटल ने, उस सौन्दर्य को देखा। दूसरे दार्शनिक ने कहा कि भाई! पिछला पटल भी तो जड़ पदार्थ है, इसमें देखने की सत्ता कहा है? आगे दार्शनिक कह रहा है कि नहीं, पिछले पटल ने उन वासनाओं को ले जाकर तन्मात्राओं के समक्ष रखा। तन्मात्राओं से यह संसार

रचा हुआ है। जिन तन्मात्राओं से सृष्टि के प्रारम्भ में परमपिता परमात्मा ने उस विशाल संसार को रचा है। तन्मात्राओं ने सौन्दर्य को देखा है। आगे दार्शनिक कह रहा है कि तन्मात्रा भी तो प्रकृति के पदार्थ हैं, इनमें देखने की सत्ता कहाँ है? उस समय दार्शनिक कह रहा है अरे, इन तन्मात्राओं ने सब कुछ इस मनीराम के द्वार पहुँचा दिया है। यह मनीराम स्थिर है तो निर्णय अच्छा करेगा, और यदि चञ्चल है तो इसकी विलक्षण गति हो जाएगी, मनुष्य की मृत्यु का सामान बनाने लगेगा। एक प्रमाण हमारे समक्ष आ पहुँचा है। सनत्कुमार ने नारद से कहा सुनो, इस प्रमाण को, यह एक अलंकार है। मन कैसे स्थिर होगा, सुनो।

मन की स्थिरता

एक द्रव्यपति थे, उनके द्वार एक सेवक जा पहुँचा, और उनसे कहा कि मैं आपकी कुछ सेवा करना चाहता हूँ। द्रव्यपति ने कहा क्या, वेतन लोगे? उस सेवक ने कहा, महाराज! मैं वेतन कुछ नही लूंगा परन्तु मेरा एक नियम है, कि जब मुझे कार्य करने को नहीं मिलेगा, तो तब ही मैं आपको मृत्यु प्राप्त करा दूंगा। द्रव्यपति ने कहा कि अच्छा, तुम मेरे द्वारा कार्य करो। वह सेवक द्रव्यपति के द्वारा कार्य करने लगा। द्रव्यपति जो उच्चारण करता, सेवक उस कार्य को कर देता। कुछ समय के पश्चात्, उस द्रव्यपति को कोई कार्य उस सेवक को देने को न रहा। द्रव्यपति बहुत चिंतित होने लगा। एक समय मार्ग में भ्रमण कर रहे थे, वहाँ एक बुद्धिमान मिला और उसने द्रव्यपति से कहा कि आप तो बड़े थकित होते चले जा रहे हैं। तब उन्होंने सब वार्ता कह सुनाई कि मेरे द्वार पर एक सेवक आया हुआ है। उसने मुझसे वचन लिया हुआ है कि जब उसे कोई कार्य करने को न रहेगा तो वह मुझे मृत्यु को पहुँचा देगा। अब मेरे पास उसको कार्य देने के लिए नहीं रहा है, इसलिए मैं उसके भुजों से नहीं बचूंगा। उस समय बुद्धिमान ने कहा कि भाई! तुम उसको अपने कार्य में क्यों लगा रहे हो, संसार के कार्य में लगा दो। उसको छूटकारा नहीं मिलेगा, और तुम उसके भुजों से बच जाओगे। बुद्धिमान की वार्ता सुनकर द्रव्यपति

गृह आया और आकर उसको संसार का कार्य बता दिया कि जाओ, तुम संसार का कार्य करो, तुम्हें छुटकारा नहीं मिलेगा। वह संसार के शुभ कार्य करने लगा, उसको छुटकारा नहीं मिला और द्रव्यपति उसके भुजों से बच गया।

यही दशा मनुष्य के मन की है। यदि मन को संसार के शुभ कार्यो में और परमात्मा के चिन्तन में लगाए रखते हैं, तो तब तक यह यथार्थ रहता है और जब इसको छुटकारा मिला, सङ्कल्प विकल्प आए, तो मनुष्य मृत्यु का सामना करने लगता है।

बुद्धि

सनत्कुमार ने नारद मुनि से कहा कि हे नारद! आज तुम मन को स्थिर करो, मन की याचना करो। यह मन बड़ा ऊँचा पदार्थ है, यह मन तुम्हारा परमात्मा से मिलान करा देगा। नारद मुनि ने कहा कि महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ, कि इस मन से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है? सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! इस मन से बढ़कर बुद्धि है, पर यह परमात्मा की देन है, बड़ा ऊँचा पदार्थ है। आज परमात्मा से उच्चारण करो, कि हे परमात्मा! हमें बुद्धि दो, जिससे विधाता! हम संसार को अच्छी तरह निर्णय कर सकें। यह मन सब वासनाओं को ले जाकर, बुद्धि को दे देता है, कि हम उस सौन्दर्य को क्या मानें। बुद्धि निर्णयात्मक है।

मुनिवरों! हमारे आचार्यों ने बुद्धि कई प्रकार की मानी है। बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा इन चार प्रकार की बुद्धियों का विवेचन आता है। आज समय आज्ञा नहीं दे रहा है। किसी द्वितीय काल में बुद्धि का विवेचन किया जाएगा।

पूज्य महानन्द जीः भगवन! बुद्धि का सूक्ष्म सा आदेश दे दीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेव नहीं, बेटा! द्वितीय काल में, अच्छा

तो मुनिवरों! देखो, बुद्धि हमारे जीवन की संचालक है। बुद्धि से कार्य करना चाहिए। मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा तीनों प्रकार की बुद्धि आ जाने के पश्चात यह आत्मा परमात्मा में रमण कर जाता है। मोक्ष प्राप्त हो जाता है। आज हम इन बुद्धियों पर विचार नहीं करते।

इसके पश्चात नारद मुनि ने कहा महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ, कि बुद्धि से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है या नहीं?

अन्तःकरण

सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! इस बुद्धि से बढ़कर यह अन्तःकरण है। तुम इस अन्तःकरण को पवित्र बनाओ। इसको पवित्र बनाने से तुम्हारा जीवन शिरोमणि बन जाएगा। यह अन्तःकरण वह पदार्थ है, कि जिसमें जितने बड़े लोक लोकान्तर हैं, जैसे हमारा यह पृथ्वी मण्डल है ऐसी ऐसी तीस लाख पृथ्वियाँ इस सूर्य मण्डल में समा जाती हैं और जैसा सूर्य मण्डल है ऐसे ऐसे एक सहस्र मण्डल बृहस्पति मण्डल में समा जाते हैं। परन्तु यह सूक्ष्म सा अन्तःकरण है, इसमें यह सब लोक लोकान्तर समा जाते हैं। ब्रह्माण्ड का ब्रह्माण्ड, जो परमात्मा का रचा हुआ है, इस अन्तःकरण में समा जाता है। यह अन्तःकरण इतना पवित्र है, इसको ऊँचा बनाओ। बुद्धियों को अन्तःकरण में रमण कर दो। जब बुद्धि अन्तःकरण में रमण करने लगेगी, तो तुम्हारा अन्तःकरण पवित्र बन जाएगा।

उस समय देवर्षि नारद ने कहा कि महाराज! मैं अन्तःकरण की ओर अधिक व्याख्या नहीं चाहता, मैं तो यह जानना चाहता हूँ, कि इस अन्तःकरण से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है?

स्मृति

सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! इस अन्तःकरण से बढ़कर यह स्मृति है। महानन्द जी दूर न जाओ, आज हमारे जीवन पर विचार कर लो। आज से हमने लाखों वर्षो पूर्व वेद संहिताओं का पाठ किया और आज पुनः से अपने कर्मों के अनुकूल, तुम्हारे समक्ष उस वेद पाठ को कर रहे हैं। आज हमें पुनः से सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। यह जो वार्ता तुम्हारे समक्ष आती चली जा रही है यह लाखों वर्ष पूर्व हमने वेदों का मन्थन किया। यह सब क्या है? यह सब अमूल्यता स्मृति की है। जन्म जन्मान्तरों के संस्कार हमारे अन्तःकरण में विराजमान रहते हैं, उनके जाग्रत होने

का नाम स्मृति है। आज मुझे मेरे प्यार महानन्द जी ने कहा, कि यह आपका वाक्य कैसे होता है। आज के विज्ञान में यह वार्ता भी आ गई। आज तुम्हें विचारना चाहिए, यह स्मृति है। हे नारद! स्मृति को ऊँचा बनाओ।
इस निर्णय के पश्चात नारद मुनि ने कहा महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ कि स्मृति से बढ़कर भी इस संसार में कोई पदार्थ है या नहीं?
ब्रह्मचर्य
सनत्कुमार ने कहा कि स्मृति से बढ़कर ब्रह्मचर्य है। यह ब्रह्मचर्य ओज और तेज को देने वाला है, यह ब्रह्मचर्य ब्रह्म में रमण करा देता है। आज तुम ब्रह्मचारी बनो, ब्रह्मचर्य की रक्षा करो। यदि हम ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं करते, तो हमारा जीवन नाम मात्र है, यह कोई मानवता नहीं है। हे नारद! यहाँ माता गार्गी ने भी ब्रह्मचर्य की बड़ी प्रशंसा की है, और कहा है कि ब्रह्मचारी, मनुष्य संसार में ऊँचा कहा जाता है, तेजस्वी कहा जाता है, आदित्य कहा जाता है, मृत्युञ्जय नाम से कहा जाता है, उसको रुद्र कहते हैं। आज इस ब्रह्मचर्य की रक्षा करो। ब्रह्मचर्य से मनुष्य मृत्यु को विजय कर लेता है। आज तुम ब्रह्मचारी बनो। ब्रह्मचारियों की अनेक वार्ता हैं। लोमश मुनि ने जीवन भर ब्रह्मचर्य की रक्षा की। देखो, अन्त में कितनी आयु वाले बने, और मोक्ष को प्राप्त किया।
ब्रह्मचर्य की रक्षा करने वाले, महर्षि अगस्त्य तीन आचमन में समुद्र पान करने वाले बने। आज मनुष्य ने इस रहस्य को जाना नहीं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मा ने मुझे महर्षि अगस्त्य के आदेशों का निर्णय दिया। महर्षि अगस्त्य ने तीन आचमनों में समुदों को पान कर लिया। सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! ब्रह्मचर्य वह होता है, जो समुद्रों के समुद्रों को पान कर लेता है। वह तीन आचमन कौन से हैं? वह ज्ञान, कर्म और उपासना, तीन प्रकार की विद्याएं और यह संसार रूपी समुद्र है। इन तीन प्रकार की विद्याओं का पान करना, इस संसार को पान कर लेना है। संसार को खारी बनाकर त्याग देना है। जिज्ञासु को, आज विचारना चाहिए, कि

महर्षि अगस्त्य ने तीन प्रकार की विद्याओं को धारण करते हुए, इस संसार रूपी समुद्र को, जो हमें दृष्टिगोचर हो रहा है, इससे पार हो गए। इसको खारी बनाकर त्याग दिया था। मुनिवरों! इसके पश्चात नारद मुनि ने ब्रह्मचर्य की व्याख्या पाते पाते प्रश्न किया कि महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ कि ब्रह्मचर्य से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है या नहीं?

अन्न

नारद मुनि के इस आदेश को पाकर सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! ब्रह्मचर्य से बढ़कर यह अन्न है। इस अन्न और वनस्पतियों की याचना करो। यह अन्न हमें ओज और ब्रह्मचर्य का देने वाला है, यह अन्न हमारा पूज्य है, इस अन्न की याचना करते चले जाओ। नारद मुनि ने कहा कि क्या यह अन्न ही सबसे बड़ा है।

पृथ्वी

महर्षि सनत्कुमार ने कहा नहीं नारद! इस अन्न से बढ़कर पृथ्वी है, तुम पृथ्वी की याचना करो, यह पृथ्वी हमारी माता है। हमारी दो प्रकार की माता होती हैं, एक जननी माता और एक पृथ्वी माता। जब हम माता के गर्भस्थल से आते हैं, तो पृथ्वी माता के गर्भस्थल में आ जाते हैं। जैसे माता के गर्भाशय में, माता की लोरियों द्वारा हमारा लालन पालन होता है, इसी प्रकार जब माता पृथ्वी की गोद में आते हैं तो नाना वनस्पतियों से और अन्न द्वारा हमारा पालन होता है। यह पृथ्वी हमारी कल्याणकारी है, इस पृथ्वी को धेनु कहा जाता है, इस पृथ्वी को नाना प्रकार से पुकारा गया है। हे नारद! यह पृथ्वी हमारी माता है, हम इसके गर्भ में आए हैं। आज हम इस पृथ्वी की याचना करें, इस पृथ्वी को विज्ञान से जानें। यह पृथ्वी इतनी भोली है, कि जिस पदार्थ की हम कल्पना करते हैं वह हमारी इच्छा के अनुकूल दे देती है। राजा रावण के पुत्र नारायन्तक ने तो कहा कि यह पृथ्वी इतनी भोली है कि इसमें कैसा भी वैज्ञानिक बन जाओ, आध्यात्मिक वैज्ञानिक को आत्मिक शान्ति देती है, और भौतिक वैज्ञानिक को भौतिक विज्ञान। मनुष्य, इसका

अनुसरण करता है और विचारता है कि हे पृथ्वी माता! तू वास्तव में कामधेनु है, कामनाओं की पूर्ति करने वाली है, तू आ और हमारी कामनाओं की पूर्ति कर। तू देवी है, वेदों ने तुझे देवी नाम से पुकारा है।

मुनिवरों! यहाँ वैज्ञानिकों ने मन की कल्पनाओं से खोजा कि हम तो इसमें से नाना प्रकार के वज्रों की, मणियों को पाएंगे तो पृथ्वी वह ही वज्रों की मणियाँ उसे दे देती है। मनुष्य ऊँचे ऊँचे पदार्थों की कामना करता है, वह प्राप्त हो जाते हैं। हे पृथ्वी! तेरे से विद्युत की कामना करते हैं, तू विद्युत को देने वाली है। राष्ट्र की कामना करते हैं तो हे पृथ्वी! तू राष्ट्र को देने वाली है। हे पृथ्वी! हम वास्तव में तेरी गोद में आए हैं। जननी माता के गर्भ से इस पृथ्वी माता की गोद में ऊँचे कर्म करते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाते हैं। पृथ्वी के आदेश पाकर नारद मुनि ने सनत्कुमार से कहा कि महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या पृथ्वी से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है?

तेज

सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! इस पृथ्वी से बढ़कर यह तेज है, जो संसार में ओत प्रोत हो रहा है। संसार को चला रहा है। यह तेज ही जब वृष्टि करता है, तो पृथ्वी से सब तत्त्व उत्पन्न हो जाते हैं। यह तेज जब समुद्रों में पहुँच जाता है, तो जलों का उत्थान होता है। जल से मेघ बनते हैं। मेघों से वृष्टि हो जाती है। वृष्टि में नाना प्रकार की वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं। जिनको मनुष्य खाता है, और इससे ब्रह्मचर्य आता है। ब्रह्मचर्य सुरक्षित होता है, तो स्मृति ऊँची होती है। स्मृति ऊँची होती है तो अन्तःकरण पवित्र होता है। जब अन्तःकरण पवित्र होता है तो बुद्धि पवित्र होती है और जब बुद्धि पवित्र होती है, तो यह मन पवित्र होता है। जब मन पवित्र होता है, तो यह वाणी पवित्र होती है और जब वाणी पवित्र होती है, तो हम संसार की जानकारी अच्छी प्रकार कर लेते है।

इसके पश्चात नारद मुनि ने कहा, महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ, कि तेज से

बढ़कर भी पदार्थ है संसार में?

अन्तरिक्ष

सनत्कुमार ने कहा, हे नारद! इस तेज से बढ़कर यह अन्तरिक्ष है। जो वाक्य आज हम उच्चारण कर रहे हैं, यह अन्तरिक्ष में रमण कर जाता है, और अन्तरिक्ष से यह वाक्य आता है, हमारी बुद्धियों के अनुकूल। जो विद्या हमने पाई है, उस अन्तःकरण के अनुकूल मेधा, बुद्धि उत्पन्न होकर उसका सम्बन्ध अन्तरिक्ष से लग कर वही वाक्य उच्चारण करने लगता है। इसको मेधा बुद्धि कहते हैं। अन्तरिक्ष से सम्बन्धित है। यह अन्तरिक्ष हमारी बुद्धियों का प्रेरक है। हमारे जीवन का प्रेरक है, आयु का प्रेरक है, अग्नि क प्रेरक है। यह प्रेरणा करने वाला अन्तरिक्ष ही है।

नारद मुनि ने कहा, महाराज! इस अन्तरिक्ष से बढ़कर भी कोई पदार्थ है।

अम्बर

सनत्कुमार ने कहा कि अरे, इससे बढ़कर यह अम्बर है। जिसमें देखो, लोक लोकान्तर रमण करते हैं। चन्द्र मण्डल, सूर्य मण्डल, ध्रुव मण्डल, सप्तऋषि मण्डल, भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम् ये लोक लोकान्तर हैं। आरुणि मण्डल है, अगस्त मण्डल है अचंग आदि लोक लोकान्तर हैं आज लोक लोकान्तरों का प्रकरण नहीं आ रहा है, संक्षेप में उच्चारण कर रहे हैं, कि ये सब लोक लोकान्तर अम्बर में रहते हैं। अपनी अपनी परिधि में, अपना अपना कार्य करते हैं।

नारद मनि ने कहा कि महाराज! इस अम्बर से बढ़कर भी कोई पदार्थ है?

प्राण

सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! अम्बर से बढ़कर यह प्राण है, इस संसार में जो सबमें ओत प्रोत हो रहा है, संसार का कल्याण कर रहा है। यह प्राण आत्मा का सहायक है। यह प्राण इस शून्य प्रकृति को चलाने वाला है। आज हे नारद! तुम प्राण की याचना करो। यह प्राण तुम्हारी आत्मिक शान्ति का प्रेरक है।

मुनिवरों! नारद जी प्राण का आदेश पाकर शान्त हो गए, और कहा कि मुझे

आत्मिक शान्ति प्राप्त होने जा रही है। उस समय सनत्कुमार ने कहा कि हे नारद! इस प्राण से बढ़कर भी संसार में कोई पदार्थ है, और वे परमपिता परमात्मा है, जो प्राण को भी देने वाला है। जो महान संसार को चलाने वाला है, हमारी आत्मा में प्रेरणा देने वाला है। हे नारद! तुम्हें आत्मिक शान्ति पानी है, तो परमपिता परमात्मा की गोद में चले जाओ।

अहा! नारद मुनि मौन हो गए। आज मुझे कितनी ऋषि की प्रेरणा मिली है। संसार के ज्ञान विज्ञान का मुझे निर्णय कराया है। मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान और सब तेजों का विज्ञान मुझे निर्णय कराया।

तो यह है मुनिवारों ! आज हमारी प्राणों की व्याख्या ।

पूज्य महानन्द जी –'धन्य हो भगवन! किसी स्थान पर तो आप बड़ी बुद्धिमत्ता की वार्ता करते हैं ।

पूज्यपाद गुरुदेव –(हास्य के साथ)तो महानन्द जी! प्रतिदिन बुद्धिमत्ता की नहीं ।

पूज्य महानन्द जी (हास्य के साथ)नही भगवन! आज तो बहुत ही बुद्धिमत्ता की हैं।

आपो वावान्नाद्भूयस्तस्माद्यदा सुवृष्टिर्न भवति व्याधीयन्ते प्राणा अन्नं कनीयो भविष्यतीत्यथ यदा सुवृष्टिर्भवत्यानन्दिनः प्राणा भवन्त्यन्नं बहु भविष्यतीत्याप एवेमा मूर्ता येयं पृथिवी यदन्तरिक्षं यद्द्यौर्यत्पर्वता यद्देवमनुष्या यत्पशवश्च वयाँसि च तृणवनस्पतयः श्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलकमाप एवेमा मूर्ता अप उपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१०.१

पदार्थः (सनत्कुमार ने कहा -) जल ही अन्न से बढ़कर है। इसलिए जब अच्छी वर्षा नहीं होती तो प्राण दुखी होते हैं अन्न थोड़ा होगा और जब अच्छी वर्षा होती है तो प्राण आनन्दित होते हैं कि अन्न बहुत होगा, पानी ही ये मूर्त्तिमान् है, जो ये पृथिवी, जो अन्तरिक्ष हैं जो द्युलोक, जो पर्वत, जो देव मनुष्य, जो पशु, जो पक्षी, तृण वनस्पति, हिंसक जन्तु, कीट, पतंग चींटी जल ही ये मूर्त्तिमान् अर्थात् जल ही की ये सब मूर्त्तियाँ हैं। इसलिए (सनत्कुमार ने कहा -) जल को काम में लाओ।

स योऽपो ब्रह्मेत्युपास्त आप्नोति सर्वान्कामाँस्तृप्तिमान्भवति यावदपां गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति। योऽपो ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवोऽद्भ्यो भूय इत्यद्भ्यो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१०.२

पदार्थः सो जो जल को बड़ा मानकर सेवन करता है, समस्त कामनाओं को प्राप्त करता है और तृप्त होता है जो जल को बड़ा (जानकर) काम में लाता है। नारद हे भगवन्! जल से (भी कुछ) बढ़कर है ? सनत्कुमार (हाँ) जल से भी (कुछ) बढ़कर है। नारद भगवान् उसे मेरे लिए कहें।

तेजो वावाद्भ्यो भूयस्तद्वा एतद्वायुमागृह्याकाशमभितपति तदाहुर्निशोचति नितपति वर्षिष्यति वा इति तेज एव तत्पूर्वं दर्शयित्वाथापः सृजते तदेतदूर्ध्वाभिश्च तिरश्चीभिश्च विद्युद्भिराह्रादाश्चरन्ति तस्मादाहुर्विद्योतते स्तनयति वर्षिष्यति वा इति तेज एव तत्पूर्वं दर्शयित्वाथापः सृजते तेज उपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.११.१

पदार्थः तेज ही जल से बढ़कर है। निश्चय वह यह (तेज) वायु के साथ होकर, आकाश को तपाता है। तब (लोग) कहते हैं कि गर्म हो रहा है तप रहा है, निश्चय

बरसेगा तेज ही उस (दृश्य) को प्रथम दिखला कर अनन्तर जल कर उत्पन्न करता है। वह यह (तेज) ऊपर जाने वाली और तिरछी गति वाली बिजली के साथ बादल की गति प्रकट करता है। तब (लोग) कहने लगते हैं चमकता है, गरजता है, बरसेगा। तेज ही उस (दृश्य) को प्रथम दिखला कर, उसके बाद जल को उत्पन्न करता है। तेज को (सनत्कुमार ने कहा) काम में लाओ।

स यस्तेजो ब्रह्मेत्युपास्ते तेजस्वी वै स तेजस्वतो लोकान्भास्वतोऽपहततमस्कानभिसिध्यति यावत्तेजसो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यस्तेजो ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवस्तेजसो भूय इति तेजसो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.११.२

पदार्थः सो जो कोई तेज को बड़ा जानकर उपासना करता है निश्चय (वह) तेजस्वी, (होता) और वह तेजस्वी प्रकाश पूर्ण, अन्धकार रहित लोकों को प्राप्त होता है। जहाँ तक तेज की पहुँच है वहाँ तक इस (तेजोपासक) का स्वेच्छाचार होता है जो तेज को बड़ा (जानकर) काम में लाता है। नारद हे भगवन्! तेज से (भी कुछ) बढ़कर है ? सनत्कुमार (हाँ) तेज से भी (कुछ) बढ़कर है। नारद भगवन् उसे मेरे लिए कहें।

आकाशो वाव तेजसो भूयानाकाशे वै सूर्याचन्द्रमसावुभौ विद्युन्नक्षत्राण्यग्निराकाशेनाह्वयत्याकाशेन शृणोत्याकाशेन प्रतिशृणोत्याकाशे रमत आकाशे न रमत आकाशे जायत आकाशमभिजायत आकाशमुपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१२.१

पदार्थः आकाश ही तेज से बढकर है। आकाश ही में सूर्य चन्द्र दोनों, बिजली, नक्षत्र और अग्नि (हैं) आकाश के द्वारा (एक दूसरे को पुकारता है) आकाश के द्वारा सुनता है प्रत्युत्तर देता है, आकाश में रमता क्रीडा करता और आकाश में रमित नहीं होता (क्रीडा नहीं करता) आकाश में उत्पन्न होता और आकाश को प्रकट करता। आकाश को काम में लाओ।

स य आकाशं ब्रह्मेत्युपास्त आकाशवतो वै स लोकान्प्रकाशवतोऽसम्बाधानुरुगायवतोऽभिसिध्यति यावदाकाशस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति य आकाशं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगव आकाशाद्भूय इति आकाशाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१२.२

पदार्थः सो जो कोई आकाश को बड़ा (जानकर) काम में लाता है आकाशवत् (उपयोगी होकर) प्रकाश वाले, पीड़ा रहित और विस्तीर्ण लोकों को प्राप्त होता है। जहाँ तक आकाश की पहुंच है वहाँ तक इस (आकाशोपासक) का स्वेच्छाचार होता है, जो आकाश को बड़ा (समझकर) काम में लाता है। नारद हे भगवन्! आकाश से (भी कुछ) बढ़कर है? सनत्कुमार (हां) आकाश से भी (कुछ) बढ़कर है। नारद भगवन् उसे मेरे लिए कहें।

स्मरो वावाकाशाद्भूयस्तस्माद्यद्यपि बहव आसीरन्न स्मरन्तो नैव ते कञ्चन शृणुयुर्न मन्वीरन्न विजानीरन्यदा वाव ते स्मरेयुरथ शृणुयुरथ मन्वीरन्नथ विजानीरन्स्मरेण वै पुत्रान्विजानाति स्मरेण पशून्स्मरमुपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१३.१

पदार्थः स्मृति ही आकाश से बढ़कर है क्यों कि यदि स्मृतिन रखते हुए बहुत (आदमी) बैठ जावें वे न तो कुछ सुन सकेंगे, न विचार सकेंगे, न जान सकेंगे जभी वे स्मरण कर पाएँगे तभी जान सकेंगे। स्मृति ही से (मनुष्य) पुत्रों को जानता है, पशुओं को पहचानता है (सनत्कुमार ने कहा) स्मृति को काम में लाओ।

स यः स्मरं ब्रह्मेत्युपास्ते यावत्स्मरस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यः स्मरं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवः स्मराद्भूय इति स्मराद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१३.२

पदार्थः सो जो कोई स्मृति को बड़ा (जानकर) काम में लाता है जहाँ तक स्मृति की पहुँच है वहाँ तक इस (स्मृति के उपासक) का स्वेच्छाचार होता है जो स्मृति को बड़ा जानकर काम में लाता है। नारद हे भगवन्! स्मृति से (भी कुछ) बढ़कर है ? सनत्कुमार (हां) स्मृति से भी (कुछ) बढकर है। नारद भगवन् उसे मेरे लिए

कहें।

आशा वाव स्मराद्भूयस्याशेद्धो वै स्मरो मन्त्रानधीते कर्माणि कुरुते पुत्राँश्च पशूँश्चेच्छत इमं च लोकममुं चेच्छत आशामुपास्स्वेति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१४.१

पदार्थः आशा ही स्मृति से बढ़कर है आशा से उत्साहित (पुरूष) निश्चय स्मृति वाला हो कर मन्त्रों को पढ़ता है। कर्मों को करता है, पुत्रों और पशुओं की इच्छा करता है। इस और उस (पर) लोक की इच्छा करता है। आशा को काम में लाओ।

स य आशां ब्रह्मेत्युपास्त आशयास्य सर्वे कामाः समृध्यन्त्यमोघा हास्याशिषो भवन्ति यावदाशाया गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति य आशां ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगव आशाया भूय इत्याशाया वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१४.२

पदार्थः सो जो कोई आशा को बड़ा (जानकर) प्रयोग मेंलाता है आशा के कारण, सभी कामनाएं बढ़ती हैं, उसकी प्रार्थनाएँ पूर्ण होती हैं। जहाँ तक आशा की पहुंच है वहाँ तक इस (आशोपासक) का स्वेच्छाचार होता है, जो आशा को बड़ा जान कर काम में लाता है। नारद हे भगवन्! आशा से (भी कुछ) बढ़कर है ? सनत्कुमार (हां) आशा से भी (कुछ) बढकर है। नारद भगवन् उसे मेरे लिए कहें।

प्राणो वा आशाया भूयान्यथा वा अरा नाभौ समर्पिता एवमस्मिन्प्राणे सर्वँ समर्पितं प्राणः प्राणेन याति प्राणः प्राणं ददाति प्राणाय ददाति प्राणो ह पिता प्राणो माता प्राणो भ्राता प्राणः स्वसा प्राण आचार्यः प्राणो ब्राह्मणः॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१५.१

पदार्थः (सनत्कुमार ने कहा-) प्राण ही आशा से बढ़कर है। जैसे (पहिये की) नाभि (धुरे) में अरे जुड़े हुए होते हैं, इसी तरह इस प्राण में सब समर्पित (परोये हुए) हैं। प्राण प्राण से चलता (अपना व्यवहार करता) है, प्राण (प्राण को) प्राण (जीवन) देता है और प्राण के लिए देता है। प्राण ही पिता, प्राण ही माता, प्राण ही भ्राता, प्राण ही बहिन प्राण ही आचार्य, प्राण ही ब्राह्मण है।

स यदि पितरं वा मातरं वा भ्रातरं वा स्वसारं वाचार्यं वा ब्राह्मणं वा किञ्चिद्भृशमिव

प्रत्याह धिक्त्वास्त्वित्येवैनमाहुः पितृहा वै त्वमसि मातृहा वै त्वमसि भ्रातृहा वै त्वमसि स्वसृहा वै त्वमस्याचार्यहा वै त्वमसि ब्राह्मणहा वै त्वमसीति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१५.२

पदार्थः सो कोई पुरूष, यदि पिता या माता वा भ्राता वा बहिन अथवा आचार्य वा ब्राह्मण को कुछ अनुचित सा कहे (तो) इस (पुरूष) को तुझ को धिक्कार हो ऐसा ही कहते हैं, निश्चय तूने पिता की हत्या की है, माता की हत्या की है, तू भ्रातृ घातक है, तू बहिन का मारने वाला है, तूने आचार्य की हत्या की तू ब्राह्मण घातक है।

अथ यद्यप्येनानुत्क्रान्तप्राणाञ्छूलेन समासं व्यतिषंदहेन्नैवैनं ब्रूयुः पितृहासीति न मातृहासीति न भ्रातृहासीति न स्वसृहासीति नाचार्यहासीति न ब्राह्मणहासीति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१५.३

पदार्थः अनन्तर इन (पिता आदि) प्राण निकले हुओं (अर्थात् मरे हुओं) को, शूल से इकट्ठा करके जला देते हैं तो इस (जला देने वाले) को पितृघातक अथवा तू मातृघाती है ऐसा नहीं (कहते) तूने भाई का वध किया है, बहन को मारा है, आचार्य का घात किया है अथवा ब्राह्मण के प्राण लिए हैं, ऐसा (कोई) नहीं कहता।

प्राणो ह्येवैतानि सर्वाणि भवति स वा एष एवं पश्यन्नेवं मन्वान एवं विजानन्नतिवादी भवति तं चेद्ब्रूयुरतिवाद्यसीत्यतिवाद्यस्मीति ब्रूयान्नापह्नुवीत॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१५.४

पदार्थः निश्चित है कि प्राण ही ये सब (पिता आदि) होता है। निश्चय वह यह (प्राणोपासक) इस प्रकार देखता इस प्रकार मानता, इस प्रकार जानता हुआ अतिवादी होता है। उसको यदि कहे कि तू अतिवादी है मैं अतिवादी हूं ऐसा उत्तर देवे, छिपावे नहीं।

एष तु वा अतिवदति यः सत्येनातिवदति सोऽहं भगवः सत्येनातिवदानीति सत्यं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति सत्यं भगवो विजिज्ञास इति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१६.१

पदार्थः परन्तु निश्चय है कि वह अतिवादी है जो सत्य को सब से बढ़कर कहता है।

सो मैं हे भगवान्! सत्य से अति वादी बनूं। सनत्कुमार तब तो सत्य की ही जिज्ञासा करनी चाहिए। नारद हे भगवन्! सत्य की मैं जिज्ञासा करता हूँ।

यदा वै विजानात्यथ सत्यं वदति नाविजानन्सत्यं वदति विजानन्नेव सत्यं वदति विज्ञानं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति विज्ञानं भगवो विजिज्ञास इति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१७.१

पदार्थः जब , वस्तुतः विशेष रीति से जानता है तब सत्य बोलता है। न जानता हुआ सत्य नहीं बोलता। जानता हुआ ही सत्य बोलता है। सनत्कुमार विज्ञान ही को जिज्ञासा करनी चाहिये। नारद हे भगवन्! विज्ञान की मैं जिज्ञासा करता हूं।

यदा वै मनुतेऽथ विजानाति नामत्वा विजानाति मत्वैव विजानाति मतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्येति। मतिं भगवो विजिज्ञास इति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१८.१

पदार्थः क्यों कि जब (मनुष्य) मनन करता है तब जानता है मनन न करने पर नहीं जानता। मनन करने ही पर जानता है। सनत्कुमार इसलिए मति (मनन करना) ही जिज्ञासा करने योग्य है। नारद हे भगवन्! मति की ही जिज्ञासा करता हूँ।

यदा वै श्रद्दधात्यथ मनुते नाश्रद्दधन्मनुते श्रद्दधदेव मनुते श्रद्धा त्वेव विजिज्ञासितव्येति श्रद्धां भगवो विजिज्ञास इति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.१९.१

पदार्थः जब श्रद्धा है तभी मनन करता है। श्रद्धा न रखते हुए मनन नहीं करता। श्रद्धा ही इसलिए जिज्ञासनीय है। नारद हे भगवान्! मैं श्रद्धा की जिज्ञासा करता हूं।

यदा वै निस्तिष्ठत्यथ श्रद्दधाति नानिस्तिष्ठञ्छ्रद्दधाति निस्तिष्ठन्नेव श्रद्दधाति निष्ठा त्वेव विजिज्ञासितव्येति निष्ठां भगवो विजिज्ञास इति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२०.१

पदार्थः जब कोई निष्ठाकरने पर ही श्रद्धा करता है। सनत्कुमार निष्ठा ही इसलिए जिज्ञासनीय है। नारद हे भगवन्! मैं निष्ठा की जिज्ञासा करता हूँ।

यदा वै करोत्यथ निस्तिष्ठति नाकृत्वा निस्तिष्ठति कृत्वैव निस्तिष्ठति कृतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्येति। कृतिं भगवो विजिज्ञास इति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२१.१

पदार्थः जभी (मनुष्य कुछ) करता है तभी निष्ठा करता है। न करने पर निष्ठा नहीं

करता। करने ही पर निष्ठा करता है। सनत्कुमार इसलिए कृति ही की जिज्ञासा करनी चाहिये। नारद हे भगवन्! कृति ही की जिज्ञासा करता हूँ।

यदा वै सुखं लभतेऽथ करोति नासुखं लब्ध्वा करोति सुखमेव लब्ध्वा करोति सुखं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति। सुखं भगवो विजिज्ञास इति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२२.१

पदार्थः निश्चय जब (मनुष्य) सुख पाता है। तब (कर्म) करता है बिना सुख प्राप्त किए नहीं करता। सुख प्राप्त करने ही पर करता है। सनत्कुमार सुख ही की तुझे जिज्ञासा करनी चाहिये। नारद हे भगवन्! सुख की जिज्ञासा करता हूं।

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति भूमैव सुखं भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य इति भूमानं भगवो विजिज्ञास इति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२३.१

पदार्थः वस्तुतः जो भूमा है वह सुख है। अल्प (क्षुद्र वस्तु) में सुख नहीं है। भूमा ही सुख है। (सनत्कुमार ने कहा -) भूमा ही की इसलिए जिज्ञासा करनी चाहिए। हे भगवन्! (नारद कहता है) भूमा ही की मैं जिज्ञासा करता हूं।

यत्र नान्यत्पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद्विजानाति स भूमाथ यत्रान्यत्पश्यत्यन्यच्छृणोत्यन्यद्विजानाति तदल्पं यो वै भूमा तदमृतमथ यदल्पं तन्मर्त्यं स भगवः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति स्वे महिम्नि यदि वा न महिम्नीति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२४.१

पदार्थः जब (मनुष्य) न कुछ और देखता है, न कुछ और सुनता है, न कुछ और जानता है वह भूमा है। और जब और कुछ देखता और कुछ सुनता है और कुछ जानता है वह अल्प है। वस्तुतः जो भूमा है वही अमृत है और जो अल्प है वह मरने योग्य है। हे भगवन्! (नारद पूछता है) वह (भूमा) किस में प्रतिष्ठित है (सनत्कुमार ने उत्तर दिया) अपनी महिमा में, अथवा (किसी) महिमा में (प्रतिष्ठित) नहीं है।

गो-अश्वमिह महिमेत्याचक्षते हस्तिहिरण्यं दासभार्यं क्षेत्राण्यायतनानीति नाहमेवं ब्रवीमि ब्रवीमीति होवाचान्योह्यन्यस्मिन्प्रतिष्ठित इति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२४.२

पदार्थः इस संसार में गाय, घोड़े, हाथी, सोना, दास, भार्य्या क्षेत्र (आयतन) और घर को महिमा कहते हैं। (परन्तु सनत्कुमार कहता है) मैं ऐसी (महिमा) को नहीं कहता क्यों कि (ऐसी महिमा में) अन्य अन्य में प्रतिष्ठित है मैं कहता हूँ (सनत्कुमार ने कहा -)।

स एवाधस्तात्स उपरिष्टात्स पश्चात्स पुरस्तात्स दक्षिणतः स उत्तरतः स एवेदँ सर्वमित्यथातोऽहङ्कारादेश एवाहमेवाधस्तादहमुपरिष्टादहं पश्चादहं पुरस्तादहं दक्षिणतोऽहमुत्तरतोऽहमेवेदँ सर्वमिति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२५.१

पदार्थः वही (भूमा) नीचे है , वह ऊपर वह पश्चिम वह पूर्व, वह दक्षिण, वही उत्तर में है। वही यह सब है। अब उस (भूमा) का अहंकार आदेश है। मैं नीचे मैं ऊपर, मैं पश्चिम, मैं दक्षिण, मैं उत्तर में हूं। मैं ही यह सब हूं।

अथात आत्मादेश एवात्मैवाधस्तादात्मोपरिष्टादात्मा पश्चादात्मा पुरस्तादात्मा दक्षिणत आत्मोत्तरत आत्मैवेदँ सर्वमिति। स वा एष एवं पश्यन्नेवं मन्वान एवं विजानन्नात्मरतिरात्मक्रीड आत्ममिथुन आत्मानन्दः स स्वराड् भवति तस्य सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति। अथ येऽन्यथातो विदुरन्यराजानस्ते क्षय्यलोका भवन्ति तेषाँ सर्वेषु लोकेष्वकामचारो भवति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२५.२

पदार्थः अब उस (भूमा) का आत्मा आदेश है। आत्मा ही नीचे, आत्मा ही ऊपर, आत्मा ही पीछे, (पश्चिम) आत्मा ही (पूर्व) आगे, आत्मा ही दक्षिण, आत्मा ही उत्तर, आत्मा ही यह सब है। निश्चय वह यह (विद्वान्) इस प्रकार देखता हुआ, इस प्रकार आत्मा में रत (प्रेम में लीन) आत्मा में क्रीडा करने वाला आत्मा में योग रखता हुआ आत्मा में आनन्द प्राप्त करता हुआ वह स्वतन्त्र (सुख का) अधिपति होता है, उस की सब लोकों में स्वतन्त्र गति होती है, और जो इस (शिक्षा) से विरूद्ध जानते (आचरण रखते) हैं वे नाशवान् लोक (गति) वाले होते हैं। उनका सब लोकों में अकामचार (स्वतन्त्र गति हीनता) होती है।

तस्य ह वा एतस्यैवं पश्यत एवं मन्वानस्यैवं विजानत आत्मतः प्राण आत्मत आशात्मतः

स्मर आत्मत आकाश आत्मतस्तेज आत्मत आप आत्मत आविर्भावतिरोभावावात्मतोऽन्नमात्मतो बलमात्मतो विज्ञानमात्मतो ध्यानमात्मतश्चित्तमात्मतः सङ्कल्प आत्मतो मन आत्मतो वागात्मतो नामात्मतो मन्त्रा आत्मतः कर्माण्यात्मत एवेदँसर्वमिति॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२६.१

पदार्थः निश्चय है कि इस प्रकार, देखने, इस प्रकार मनन करने वाले और इस प्रकार जानने वाले उस इस (विद्वान्) को, आत्मा ही से वह सब (प्राप्त होता है) आत्मा से प्राण, आत्मा से आशा, आत्मा से स्मृति, आत्मा से आकाश, आत्मा से तेज, आत्मा से जल, आत्मा से अविर्भाव (प्रकाश) तिरोभाव (अप्रकाश), आत्मा से अन्न, आत्मा से बल, आत्मा से विज्ञान, आत्मा से ध्यान, आत्मा से चित्त, आत्मा से संकल्प, आत्मा से मन, आत्मा से वाणी, आत्मा से नाम, आत्मा से मन्त्र, आत्मा से कर्म, (और) आत्मा ही से ये सब (प्राप्त होते हैं।)

तदेष श्लोको न पश्यो मृत्युं पश्यति न रोगं नोत दुःखताँ सर्वँ ह पश्यः पश्यति सर्वमाप्नोति सर्वश इति। स एकधा भवति त्रिधा भवति पञ्चधा सप्तधा नवधा चैव पुनश्चैकादशः स्मृतः शतं च दश चैकश्च सहस्राणि च विँशतिराहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षस्तस्मै मृदितकषायाय तमसस्पारं दर्शयति भगवान्सनत्कुमारस्तँ स्कन्द इत्याचक्षते तँ स्कन्द इत्याचक्षते॥ छान्दयोग्पनिषद ७.२६.२

पदार्थः वह यह श्लोक (प्रमाण) है। (भूमा का) साक्षी मृत्यु को नहीं देखता, न रोग को न दुखों को (देखता है), प्रसिद्ध है कि (वह ब्रह्म का) साक्षी सब को देखता है सब प्रकार से सब को प्राप्त कर लेता है। वह (जगदुत्पत्ति से पूर्व) एक ही (प्रकार का) होता है फिर तीन, पांच, सात और नौ प्रकार का हो जाता है। फिर वह ग्यारह प्रकार का कहलाता है (फिर) सौ और दस (११०) एक और बीस हजार (हो जाता है।) आहार के शुद्ध होने पर, अन्तः करण की शुद्धि (होती है) अन्तःकरण के शुद्ध होने पर (भूमा की) स्मृति दृढ़ (हो जाती है), और स्मृति (में, दृढ़ता की) प्राप्ति

कर समस्त (हृदय की) गांठे खुल जाती हैं, भगवान् सनत्कुमार ने, (राग द्वेष रूप) दोष मल दिये गये (विनष्ट कर दिये गये ऐसे) उस (नारद) को, अन्धकार का (परला) किनारा दिखला दिया। उस (सनत्कुमार) को (लोग) स्कन्द कहते हैं, (हां) उस को स्कन्द कहते हैं।